आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 1/मार्च 2024

Received: 10/03/2024; Accepted: 14/03/2024; Published: 24/03/2024

# आत्मजयी : एक विश्लेषण

**डॉ. दीपा देशपांडे**
सहायक प्रोफ़ेसर
सुराना स्वायत्त डिग्री महाविद्यालय
सौथ एन्ड रोड, बेंगलुरू
मोबाइल: 8762334498
ई-मेल: deepa.chandrala@gmail.com

डॉ. दीपा देशपांडे, **आत्मजयी : एक विश्लेषण**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 1/मार्च 2024,(41- 45)

## परिचय

भारतीय काव्य परंपरा में 'काव्य' का व्यपक अर्थ रहा है। कवि साधारण व्यक्ति की अपेक्षा अधिक भावुक होता है। वह जो अनुभव करता है ,उसे अभिव्यक्त करता है। आज का साहित्य नवीन जीवन बोध एवं शाश्वत जीवन मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा चाहता है । नयी कविता के कवियों ने प्राचीन प्रख्यात कथाओं का पुनर्निर्माण किया है। आज का साहित्य परिवर्तित हुआ है । जीर्ण परंपरा से लिपटकर जीना स्वीकृत नहीं है। नये विचार ,नयी दिशा की ओर कवि की रचना अग्रसर है। आत्मजयी कुँवर नारायण द्वारा रचित मिथकीय चिंतन से युक्त काव्य कृति है। आत्मजयी एक कालजयी रचन है ,आज भी पाठकों की चेतना को झकझोरती है।आत्मजयी में समसामायिकता, आधुनिकता बोध विद्यमान है। चिंतन की दृष्टि से आत्मजयी खंडकाव्य का प्रबंधात्मक रचनाओं में विशिष्ट स्थान रहा है। आधुनिक युग में विसंगतियाँ, विडंबना विद्यमान है, ऐसे संदर्भ में कवि ने जीवन की सार्थकता सिद्ध करने का प्रयास किया है।

## आत्मजयी

आत्मजयी कुँवर नारायण द्वारा रचित एक मिथकीय खंडकाव्य है । इसका कथानक **"कठोपनिषद्"** के नचिकेता के प्रसंग पर आधारित है । यह एक चिंतन प्रधान खंडकाव्य है, अपने चिंतन की अभिव्यक्ति के लिए कवि ने "**कठोपनिषद्"** को आधार बनाया है, किंतु आत्मजयी की कथा 'कठोपनिषद्' की कथा से थोडी भिन्न है। मिथकीय खंडकाव्यों की यही विशेषता है कि कवि किसी पौरणिक पात्रों और घटनाओं को आधार बनाकर , मूल कथा प्रसंगों में परिवर्तन करके अपने भावानाओं और विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। आत्मजयी की कथा के नचिकेता के आत्महत्या प्रसंग में कवि ने थोडा सा परिवर्तन किया है। इस संबंध में कवि का कथन इस प्रकार है,

"मेरे द्वारा लिये गये प्रसंग में यह अपेक्षित है कि वह वास्तव में मरता नहीं मरने से पहले पानी से बाहर निकाल लिया जाता है । लेकिन अचेतनावस्था में वह स्वप्न देखता है- यम से साक्षात्कार यह उसके अंतर्मन में स्थित मृत्यु का ही पौराणिक रूप है।"१.

'कठोपनिषद्' में यम की अनुपस्थिति में नचिकेता तीन दिन, तीन रात निराहार रहकर यम की प्रतीक्षा करता है, फलस्वरूप यम बालक को तीन वर माँगने की आज्ञा देते हैं। नचिकेता पहला वर वाजश्रावा का अपने प्रति क्रोध शांति, दूसरा यज्ञों में नचिकेताग्नि, और तीसरा मृत्य के रहस्योदघाटन, यें तीन वर प्राप्त करता है। इस संबंध में कवि का कथन इस प्रकार है,

"मैंने आत्मजयी में पहले और तीसरे वरदान के आधार पर ही जीवन संबंधी कुछ धारणाओं पर कुछ विचार कियाहै।"२.

कवि ने अपनी कल्पना से कुछ विचारों को प्रस्तुत करके 'कठोपनिषद्" की कथा को नये संदर्भ में देखने का प्रयास किया है।

- **आत्मजयी खंडकाव्य : मिथकीय विश्लेषण**

कुँवर नारायण द्वारा रचित आत्मजयी खंडकाव्य मिथकीय चिंतन से युक्त काव्य कृति है। आधुनिक युग में विसंगतियाँ हैं, विडंबना ,भयावह स्थितियाँ विद्यमान हैं, ऐसे संदर्भ में कवि कुँवर नारायण जी ने जीवन में एक नयी चेतना को प्रयास किया है। आत्मजयी खंडकाव्य में नचिकेता 'जीवन' तथा 'मृत्यु' से साक्षात्कार करता हुआ जीवन के परम लक्ष्य को पाना चाहता है, वह ऐसे अमरत्व को पाना चहता है जो जिससे पूरी मानवता सम्मनित हो सके। आत्मजयी खंडकाव्य में प्रमुख रूप से इन बिंदुओं पर ध्यान दिया गया है।

**जीवन की चिरंतनता:**

आत्मजयी खंडकाव्य में जीवन की सारता और असारता पर प्रकाश डाला गया है। जीवन को एक व्यक्ति समाज ,देश-काल तक सीमित नहीं रखा जा सकता । मानव एक व्यक्ति के रूप में समाप्त हो जाता है। किंतु जीवन का अस्तित्व समाप्त नहीं होता । आत्मजयी में नचिकेता के द्वारा उठायी गयी समस्या एक विचारशील व्यक्ति के द्वारा उठायी गयी समस्या है। नचिकेता आदिम प्रश्नों को बृहत्तर जीवन परिप्रेक्ष्य में अनुभवात्मक धरातल पर टटोलता है। कवि ने नचिकेता को ऐसा दर्शाया है कि, वह जीवन तथा मृत्यु से साक्षात्कार कराता हुआ जीवन की संगती तथा विसंगति को महसूस करता है। इसी दृष्टि से अभिभूत नचिकेता जीवन के चिरंतन मूल्यों को खोजता है। भौतिक ऐश्वर्य से विरत नचिकेता में अमरत्व की आकांक्षा है। प्रस्तुत संदर्भ में कवि ने नचिकेता के माध्यम से, यह संदेश दिया है कि, आज के संदर्भ में मनुष्य भौतिक सुख-संपत्ति जुटाने में संलग्न है,अतः वह मानसिक शांति खो रहा है। नचिकेता की तरह प्रत्येक मनुष्य को विचार शील व्यक्ति बनना चाहिए।

**मृत्यु का चिंतन**

नचिकेता अमर जीवन मूल्यों की तलाश में स्वयं को मृत्यु को सौंप देता है। कवि के अनुसार 'यम' उसके अंतर्मन में स्थित मृत्यु का ही पौराणिक रूप है। मृत्यु को समझकर ही व्यक्ति जीवन में अमरत्व प्राप्त कर सकता है। मृत्यु जीवन का अंतिम सत्य है। इससे कोई भाग नहीं सकता ,इसलिए कवि मृत्यु के सत्य को स्वीकार करते हुए ,उससे पहले मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए संदेश देते है। मृत्यु को समझकर ही व्यक्ति, उसका सामना कर सकता है। मृत्यु से भागनेवाले ,उससे डरनेवाले लोग मृत्यु का चिंतन न करके सुख- सुविधाओं में निरत रहते हैं और अपने जीवन को व्यर्थ करते हैं।

नचिकेता मृत्यु का समना करते हुए उसे अपनाना चाहता है ,ऐसे संदर्भ में वह निराशा का भी अनुभव करता है। वह अपनी आस्था से मृत्यु रूपी सत्य को जान जाता है, वह समझता है कि काल ही सत्य है और और चिरंतन है। विजया शर्मा के अनुसार, " मृत्यु के चिंतन से निराश ही पैदा हो ऐसा आवश्यक नहीं कोई नितांत मौलिक दृष्टिकोण भी पैदा हो सकता है।"३

नचिकेता के माध्यम से कवि यह दर्शाना चाहते है कि, वह ऐसा जीवन प्राप्त करना चाहता है कि जिसे मृत्यु भी नष्ट न कर सकें । मृत्यु तो शरीर के लिए है आत्मा अमर है। व्यक्ति अपनी साधना द्वारा अमर हो सकता है।

**आत्मशक्ति की महत्ता:**

'आत्मजयी' का अर्थ होता है '**आत्म को जीतनेवाला**'। आत्मशक्ति' के अभाव में आत्मजयी हो पाना कठिन है। भारत के प्राचीन चिंतकों ने इंद्रीय सुखों को प्राधानता नहीं दी । किसी भी महान लक्ष्य प्राप्त करने से पहले आत्मविश्वास का अर्जित करना आवश्यक है। कवि कुँवर नारायण जी ने नचिकेता के माध्यम से आत्मशक्ति पर बल दिया है। आत्मशक्ति को जो कोई भी व्यक्ति प्रबल बना लेगा वह असंभव को भी संभव बना सकता है। आत्मशक्ति का अर्थ है आज के कर्तव्य विभ्रांत व्यक्ति में एकात्मशक्ति जाग्रत करना, जिससे वह निराशामय लक्ष्यहीन जीवन को दिशा देने में सफल हो सके। कर्तव्य से विमुख व्यक्तियों को अपना कर्तव्य पालन करने में आत्मशक्ति मनोबल देती है। आधुनिक मानव कई प्रकार के तनावों के कारण त्रस्त है। वह मानसिक शांति के लिए भटक रहा है।

भौतिक प्रगति को ही आज का मानव अधिक महत्व दे रहा है, अतः वह मूल्यों को त्याग रहा है। अत: इस संदर्भ में बलभीम राजगोरे जी का कथन है कि ,"भौतिक प्रगति से प्रभावित आज का मानव आत्मपरक दृष्टि खोए दे रहा है । परिणामतः आत्मिक स्तर पर घोर असंयम आने लगा है। जीवन की यथार्थता दुःख भोग नहीं प्रत्युत किसी अमर अर्थ में जी सकने में है जीवन की सच्चाई का समर्थन आत्मजयी में हो पाया है।"४. प्रस्तुत संदर्भ में आधुनिक मानव द्वंद्व, कुंठा, में जी रहा है। स्वार्थ परता से मूल्यों का ह्रास होता है और

आत्मशक्ति कुंठित हो जाती है। कवि ने आत्मजयी खंडकाव्य में मानव को लौकिक ही नहीं अपितु आत्मिक उन्नति पर ध्यान देने का संदेश दिया है, जो विश्व को सही दिशा निर्देश कर सकता है।

**आत्मजयी में पीढ़ियों के संघर्ष का चित्रण:**

कुँवर नारायण जी ने आत्मजयी के माध्यम से मानवीय जटिलताओं का बोध कराने का प्रयास है। "नचिकेता और वाजश्रवा की असहमति तथा वाजश्रवा का क्रोध में नचिकेता को मृत्यु को दे देना न केवल नयी और पुरानी पिढ़ी के संघर्ष का प्रतीक है बल्कि उन वस्तुपरक वैदिक तथा आत्मपरक उपनिष्तकालीन दृष्टीकोणों का भी प्रतीक है, जिनका एक रूप हम अपने आज के जीवन में भी पाते हैं।"५ नचिकेता अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह करता है। अपने पिता के द्वारा किये जानेवाले बाह्याडंबरों का विरोध करता है। आज के संदर्भ में भी नवीन तथा प्राचीन पीढ़ी के बीच की प्रकार के मत-भेद देख सकते हैं। वह पिता के 'वस्तुवादी' दृष्टिकोण का विरोध करत है। वह धर्म के नाम पर वस्तुओं को जुटाना नहीं चाहता। वाजश्रवा जैसे लोग समाज में व्याप्त है जो अपने स्वार्थ के आगे कुछ और नहीं सोचते। कवि ने परंपरा के आड में होने वाला स्वार्थपरता का वोरोध किया है।

**जड़वादी प्रवृत्ति का विरोध :**

वाजश्रवा एक प्रकार से " **जड़वादी मूल्यों** "का प्रतीक है, नचिकेता नयी पीढ़ी का प्रतीक है। वह अपने निर्णयों को नचिकेता पर लादना चाहता है। पिता वाजश्रवा नचिकेता के व्यक्तित्व को विकसित होने में बाधा उत्पन्न करता है। उन्मुक्त परिवेश में जीवन यापन करने का अधिकार सबको है। नचिकेता आँखें मूँदकर किसी भी विषय को स्वीकार करना नहीं चाहता । वह तर्क-वितर्क से से विचार विमर्श करके सत्य को अपनाना चाहता है। नचिकेता को पवित्र आचरणों में विश्वास है। जीवन में छल और बाह्याडंबरों में विश्वास नहीं है। आत्म सीमित व्यक्ति भविष्य निर्माण नहीं कर पाता, नयी पीढ़ी ,नया समाज नया भविष्य चाहती है। कवी ने पुरानी पीढ़ी को अपना संकीर्ण दृष्टिकोण बदलने का संदेश दिया हैं।

**निष्कर्ष:**

आत्मजयी खंडकाव्य में नचिकेता के माध्यम से कवि कुँवर नारायण ने मनुष्य के जीवन के चिरंतन प्रश्नों को उठाने का प्रयास किया है। इसमें मुख्यतः व्यक्ति कि उद्विग्नता जटिलता तथा संवेदनाओं का विश्लेषण किया गया है। आधुनिक मानव कुंठा और निराशा से त्रस्त है,अतः ऐसे समय में वह अपने मन को संतुलित करने में असफल सिद्ध हो रहा है। जीवन में विसंगतियों से त्रस्त आज का मानव मुक्ति के लिये झटपटा रहा है। इसलिए कवि अपनी आत्मशक्ति को विकसित करने का संदेश देते हैं इसके साथ मानवीय मूल्यों पर भी बल दिया गया है। कवि ने संकुचितता को त्यगकर उदारवादी विचार को अपनाने का संदेश दिया है।

**पाद टिप्पणियाँ :**

१. कुँवर नारायण-आत्मजयी-भूमिका-पृ.सं-९

२. कुँवर नारायण-आत्मजयी-भूमिका-पृ.सं-९

३. विजया शर्मा-आत्मजयी : चेतना और शिल्प-पृ.सं- १५

४. डॉ. उमाकांत गुप्त-नयी कविता के प्रबंध काव्य शिल्प और जीवन दर्शन-पृ.सं- ६७

५. कुँवर नारायण-आत्मजयी-भूमिका-पृ.सं-९

**संदर्भ ग्रंथ:**

१. कुँवर नारायण, (१९६५) आत्मजयी, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली

२. डॉ. उमाकांत गुप्त (१९८५) नयी कविता के प्रबंध काव्य शिल्प और जीवन दर्शन, वाणि प्रकशन, नयी दिल्ली

३. विजया शर्मा (१९७९ ) आत्मजयी : चेतना और शिल्प, एस.जे.वसनी द्वारर दि मैकमिलन कंपनि ऑफ इंडिया लिमिटेड – दिल्ली

४. संदीप रण्भीरकर (२०१०) आत्मजयी में आधुनिक चिंतन, अमर प्रकाशन, मथुरा

५. डॉ. विनोद गोदरे (१९८५) आधुनिक प्रबन्ध काव्य : संवेदना के धरातल, वाणि प्रकशन, नयी दिल्ली

**********